सं श्रो विव /एफ व्हीं / 165-86/36118.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं गोयल इण्डस्ट्रीज कारपोरें शन, 14/5, मथुरा रोड, पतीद बाद, के अभिक भी डोमन सिंह, पुत्र श्री गजाधर सिंह गांत्र सदेवा थाना डगुरा बडायही जिला गया (बिहार) तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रोडोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिनर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, ग्रीद्योगिक विवाद ग्रिविनयम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवितयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिविम्चना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून,1978 के साथ पढ़ते हुए ग्रिविस्चना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनयम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:---

क्या थी डोना जिंह हो से बार्ग का समापन कायोजिन तमा ठी ह है? यदि नहीं, नो बहु जिल राहत का हकतार है? सं० थ्रो०वि०/एक.०डी०/103-86/36125.—-चूंकि हरियाणा के राज्यमान की राय है कि मैं० जयहिन्द इन्वेस्टमैंट प्रा० लि०, प्लाट नं० 135, सैक्टर-24, फरीशबाद, के श्रीमक श्री श्रद्धन खां, पुत्र श्री सलामतखां, गांव व डा० मदनसाठ, जिला छपरा (बिहार) तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई थौद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245 दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरोदाबाद को विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा भामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है:-

क्या श्री अब्दुल खां की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो वि एफ.डी./144-86/36183.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं इपकी श्राटो प्रा० लि०, लिक रोड़ राजेंद्र कालोंगी, पुराना फरीइश्वार, के श्रीनिक श्रो विवाश मार्की महा स्वित इत्यक जिना परिषद् 1-ए/119 एत श्राई. टी., फरीइश्वाद तथा उसके प्रवन्तकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामलें में कोई श्रीद्योगिक विवाद है।

और चूंकि हरियाणा के राज्यमाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते है।

इसलिये अब, ओद्योगिक विवाद अधिनियम 1947 की धारा 10 की उपवारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियागा के राज्याल इस है द्वारा सरकारी अधिमुचना सं. 5415-3-अन 68/15254 दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए अधिमुचना सं. 11495-जी-अन-57/11245 दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उसने अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अब न्यायालया, फरीदाबाद को विवाद प्रस्त पा उसमें सुसंगत या उससे सम्बन्धित नी बे लिखा मामना न्यायिनियम एवं पंचाट तीन मास में देने हें तु निर्दिश्य करते हैं जो कि उसन प्रवन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामना है या विवाद से सुसंगत अथवा तस्विचन मामना है।

क्या श्री विनध्याचल की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 1 ग्रक्तूबर, 1986

सं० थ्रो० वि० विमुना / 135-86/36435. —चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय कि मै० छाबड़ा मैटल इण्डस्ट्रीज, मनोहर नगर, जगाधरी (अम्बाला), के श्रमिक श्री अमर नाथ, पुत्र श्री तेलू राम, माफीत डा० सुरेन्द्र कुनार शर्मा, मैटल वर्कस यूनियन धर्मशाला, ब्राह्मण रेलवे रोड़, जगाधरी तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीखोगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसिलये, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई ग्रिक्तियों का प्रयोग करतें हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं०3(44)84-3-श्रम दिनांक 18 ग्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रियीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते है जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री श्रमर नाथ की सेवाग्नों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?